अ ली क

अंक: सात

फरवरी।। माघ।। 2026

आड़ी

एई आंगुले लुकिए छिलो आड़ाल करा मैजिक साड़ी
द्रोण के दिले सेई आंगुलई?तोमार संगे आमार आड़ी

भावानुवाद

इस उंगली में छुपी हुई थी ओट लिए वह मैजिक साड़ी
दिया द्रोण को वह उंगली क्यों?संग तुम्हारे मेरी आड़ी

– **पापड़ी गंगोपाध्याय** (बांग्ला कवि)

अर्थ संकेतः आड़ी – नाराजगी भरा इजहार (कट्टी)

Edited and published by Neel Kamal from 244, Bansdroni Place, Kolkata- 700070 and printed at Jayasree Press, Kolkata- 700009.

लीक लीक गाड़ी चले लीकहिं चले कपूत

लीक छोड़ तीनों चलें शायर सिंह सपूत

अ ली क

फरवरी ।। माघ ।। 2026

अंकः सात

सम्पादक

नील कमल

आवरण चित्र

छायाकारः कल्पोत्तम/ शिल्पीः हितिका

अलीक पत्रिका के लिए नील कमल द्वारा 244, बाँसद्रोणी प्लेस, कोलकाता -700070 से प्रकाशित

दूरभाष: 9433123379/ 8013046813

ई-मेल: nneelkkamal@gmail.com

चयनित कविताएँ

विधान गुंजन की कविताएँ

शहीद सैनिक के बच्चे

जिनके पिता इस युद्ध में शहीद होंगे

उनके सीने में धधकती रहेगी आजीवन एक आग

दुश्मन देश के सैनिकों को मार गिराने की

शासक को अधिक मेहनत नहीं करनी होगी

सैनिकों की संख्या में संतुलन बनाए रखने

और अगले युद्ध के लिए

सीना भेद देने वाले लड़ाकों की तलाश करने में!

लड़ाके तैयार हो रहे होंगे

अपने सैनिक पिता के कातिल से प्रतिशोध के लिए

जो तैयार करेंगे कुछ और अनाथ

पड़ोसी मुल्क की सेना में काम आने को!

सबका प्रिय होने के लिए

अब और नहीं दोहराऊँगा उसे

जिसे दोहराने में मुझे सोचना पड़े जरा भी

अपने विवेक को दे दूँगा जहर

ठूँस दूँगा अपनी समझ के मुँह में जूते

करूँगा वो सब जो किसी ने नहीं किया

या किया भी तो रहा कहीं का नहीं वो

निकल जाऊँगा अचानक बिना देखे समय और मुहूर्त

अब हर मूर्ख को बताऊँगा ज्ञानी

संसद और अदालत पर अचानक ही करने लग जाऊँगा भरोसा

सुबह शाम लेने लग जाऊँगा ईश्वर का नाम

तुम्हारे राजा को मानने लग जाऊँगा अपना राजा

रावण को कहने लग जाऊँगा राम!

परिभाषा

मैं सफलता के भ्रम को

चूमने से नकारता हूँ

आमंत्रित करता हूँ विफलताओं को

उसे वापस तैयार हो मेरे संग

प्रतिस्पर्धा करने को!

मैं हार की दुर्गंध में लेटा बरसों से

देखता आ रहा हूँ जीत की महक के स्वप्न!

मैं निराशा के सिक्के को

अपनी चोटिल उँगलियों से पलट देना चाहता हूँ

मैं जानता हूँ उसने अपनी दूसरी तरफ

छुपा रखा है

मेरी आशा को

और मैं तब तक तुम्हारी दौड़ में

शामिल होने को तैयार नहीं

जब तक तुम समझ नहीं लेते

मेरी हार-जीत की परिभाषा को!